खण्ड-10, अंक-1, वर्ष-2022, मु0प्र0 198-201
D.O.I.: https://doi.org/10.22445/avsp.v10i1.36
SJIF (2021) : 7.247

वैज्ञानिक आलेख

Ramayan Darshnam Temple

Sangita Shukla
Department of Ancient India History and Archaeology
Navyug Kanya Mahavidyalaya, Lucknow-226 004, UP, India
sangitashukla1411@gmail.com

Received: 31-08-2022, Accepted: 02-10-2022

Abstract- Teerth is a sacret place where human feels mass consciousness along with Art, Craft, Architecture and Culture. In 2017, Sri Ramayan Darshanam Temple Complex was established in Kanyakumari at the end point of India. Present article describe architecture, art and craft of temple complex and discusses how it enhance energy and feeling of self-pride among Indians[1].

Key words- Ramayan Darshanam Temple, Craft, Architecture, History

श्री रामायणम् दर्शनम् मंदिर

संगीता शुक्ला
नवयुग कन्या महाविद्यालय, लखनऊ–226 004, उ0प्र0, भारत
sangitashukla1411@gmail.com

सार– तीर्थ वह स्थान हैं जहाँ मानव को सामूहिक चेतना को अनुभव करने के साथ–साथ वह कला, शिल्प, स्थापत्य व संस्कृति को जानने व समझने का अवसर भी प्राप्त करता है। भारत के कन्याकुमारी में 2017 में भी रामायणदर्शनम् प्रांगण की स्थापना की गई है। प्रस्तुत आलेख में प्रांगण के स्थापत्य, कला एवं शिल्प का वर्णन किया गया है तथा यह भारतवासियों में किस प्रकार ऊर्जा एवं आत्मगौरव का भाव जगा सकता है इसका विवेचन किया गया है।

बीज शब्द– श्री रामायणदर्शनम् मंदिर, शिल्प, स्थापत्य, इतिहास

1. **परिचय**– भारत एक प्राकृतिक, भौगोलिक व सांस्कृतिक विविधता का देश है। प्रत्येक भू–भाग की अपनी निराली परंपरा है जो वहाँ पर निर्मित मंदिरों व अन्य भवनों में साफ झलकती है। हजारों वर्षों पहले बने ये भवन उस समय के लोगों व शिल्पकारों के ज्ञान, कला व हुनर के प्रतिनतमस्तक होने को मजबूर करता है। कठिन व दुर्गम स्थानों पर निर्माण कार्य, पाषाणों का चयन उन्हें तोड़ना व शिल्पकारी करना आज की तरह सहज ना रहा होगा। उत्तर में केदारनाथ, पश्चिम में सोमनाथ, द्वारकाधीश पूर्व में कोणार्क, पुरी व दक्षिण में मीनाक्षी, पद्मनाभ आदि असंख्य मंदिरों के निर्माण में स्थानीय प्रस्तरों का उपयोग होना एक सुखद अनुभूति देता है।

भारत वर्ष के सुदूर दक्षिणी बिन्दु पर स्थित कन्याकुमारी सन् फरवरी 2017 तक तीन महत्वपूर्ण स्थलों के लिये विख्यात रहा है। यह तीन हैं–

(1) देवी कन्या कुमारी मंदिर,
(2) विवेकानन्द शिला स्मारक और
(3) थिरुवेल्लुर प्रतिमा।

कन्याकुमारी के आवासीय स्थल में स्थित विवेकानन्द केन्द्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा 12 जनवरी 2017 को युवा दिवस के अवसर श्री रामायण दर्शनम् नामक एक नवीन मंदिर का उद्घाटन किया गया है। 3.6 एकड़ में निर्मित दो मंजिला इस मंदिर की वास्तु–योजना विवेकानन्द शिला स्मारक के निर्माण योजना तैयार करने वाले वास्तुविद् एस.के. आचारी के वास्तुविद पुत्र– द्वय श्री के.दक्षिणमूर्ति और श्री गणेश मूर्ति द्वारा तैयार की गई है। श्री रामायणदर्शनम् में 6.4 फीट आकार वाले 86 चित्र प्रदर्शित हैं। यह चित्र वाल्मीकि रामायण की तपस्या से लेकर श्रीराम के राज्याभिषेक तक की घटनाओं को प्रदर्शित करते हैं। सभी चित्र श्री टी. बास्वरदास द्वारा आधुनिक एक्रेलिक चित्रकारी द्वारा निर्मित है।[2]

मंदिर के सम्मुख भाग में वीर हनुमान की काले ग्रेनाइट पत्थर से बनी 27 फीट ऊँची मूर्ति स्थित है। वस्तुतः काली ग्रेनाइट–एक व्यापारिक नाम है क्योंकि ग्रेनाइट एक हलके रंग (सफेद, गुलाबी या लाल) का पत्थर होता है। प्रयुक्त ग्रेनाइट वास्तविकता में गैबरा डोलेराइट बसाल्ट चानोकाइट आदि हो सकती है जिनकी मूर्तियां बनाई जाती है। जो कि अपने दृढ़ता टिकाऊपन व रासायनिक अपक्षय का निरोध के लिये जानी जाती है।[3]

रामायणदर्शनम्, भारत माता सदन तथा वीर हनुमान युक्त यह परिसर भारतीय रामराज्य की परिकल्पना तथा संरक्षणीय मानव मूल्यों को भली–भाँति प्रस्तुत करता है। जिस प्रकार साहित्य एवं लोक में प्रचलित रथारूढ़ सूर्य के प्रत्येक दिन उदयांचल से अस्ताचल तक यात्रा करने का उल्लेख किया गया है और उस परिकल्पना का मूर्तन 13वीं शती में मंदिर के दक्ष वास्तुकारों ने कोणार्क के सूर्य मंदिर में किया है। उसी प्रकार रामराज्य की जो परिकल्पना साहित्य में मिलती है उसका मूर्तन इस मंदिर में किया गया है। यह मंदिर सौर ऊर्जा संयंत्र के द्वारा पूर्णतः वातानुकूलित (एयर कण्डीशन्ड) है। पूरे प्रांगण के मध्य में दो मंजिला भवन है जिसमें रामायणदर्शनम् तथा भारत माता मंदिर स्थित है। प्रांगण में सर्वत्र मनोहारी वृन्दावन का निरूपण किया गया है। जहाँ श्रीवत्स, हंस, वृषभ, गज तथा नृत्यरत मयूर की मनोहारी छवि अंकित है। गज–हनुमत का नवीनता लिये मूर्तन गज–लक्ष्मी के स्वरूप से अभिप्रेरित प्रतीत होता है क्योंकि हनुमत् मूर्ति के सम्मुख दोनों पार्श्वों में दो अत्यन्त अलंकृत सफेद हाथी अपनी सूंड़ को ऊपर उठाकर अभिनंदन मुद्रा में निर्मित किये गए हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि निर्माता लोक से हनुमतवत राष्ट्रभक्ति की अपेक्षा को रेखांकित कर रहा है और काले ग्रेनाइट का प्रयोग हनुमान की दृढ़ता का परिचायक है। हनुमान के वक्षस्थल पर राम–सीता का अंकन हृदय में राम और सीता के प्रति आदर रखने और उनके गुणों के अनुसार आचरण करने की ओर इंगित करता है।

इसी प्रांगण में फाइबर ग्लास से निर्मित गंगाधर शिव की विशालाकाय प्रतिमा हैं, जिसे चार स्वर्ण–ताम्र ओप वाले हाथी वहन कर रहे हैं। बड़े आकार की मूर्तियों को बनाने में आजकल फाइबर ग्लास (तन्तु कांच जड़ित प्लास्टिक) से भी बनाया जाता है। ये हल्का होने के साथ टिकाऊ अग्निरोधक व मजबूत होता है। बाग के मध्य में बालक रूप में मुरलीधारी कृष्ण की प्रतिमा का निर्माण कर गोचर का मनोहारी रूप निर्मित किया गया है। उत्तर भारत में बालकृष्ण की लीलाओं का प्रमुख केन्द्र वृन्दावन के गोचर की मनोहारी प्रस्तुति इस कन्याकुमारी स्थित मन्दिर में की गयी है। इस अनुपम प्रस्तुति के द्वारा ''परस्परोपगहो जीवानाम'' अर्थात् एक दूसरे का उपकार करते हुए सह अस्तित्व में रहना ही जीवों का कर्तव्य (धर्म) है। मानव के वास्तविक सुख प्राप्ति के प्रमुख तरीके की ओर ध्यान दिलाया गया है। मानव तो स्वभाव से ही सौंदर्यप्रेमी, प्रकृतिप्रेमी ओर प्रेम का आकांक्षी रहा है। जिसे भारतीय मनीषियों ने काम और मनोवैज्ञानिकों ने सेक्स का नाम दिया है। जिसका अभाव मानव को हिंसक, पशुवत अथवा मृतप्राय बना देता है। वह दोपाया बना चौपाया पशुवत जीवन बिताता रहता है। लकड़ी का वह टुकड़ा ही चन्दन कहलाता है जिसमें एक विशिष्ट महक होती है। वह मानव ही क्या जिसमें मानवीयता नहीं हो ? एक समावेशित समाज स्वस्थ मानव का निर्माण कर सकता है। समावेशी समाज के निर्माण में रामायण का महत्व, हनुमान के रूप में एक आदर्श सेवक की महिमा तथा श्री एकनाथ राना डे के धैर्य सहित दृढ़ प्रयासों का यशोगान करता हुआ यह मन्दिर किसी भी कलाकार के लिये एक तीर्थ से कम नहीं है।

2. **मंदिर प्रांगण का विवरण**– इसकी चाहरदीवारों पर दो स्तम्भों के मध्य में रामायण के श्लोकों से युक्त फलक लगे हुए हैं। यह श्लोक संस्कृत भाषा में हैं और इनका अनुवाद नहीं दिया गया है। इसका तात्पर्य ये है कि निर्माता या तो इस बात से आश्वस्त हैं कि पाठक को संस्कृत का ज्ञान है अथवा वह भारत में दीर्घकाल से चले आ रहे राष्ट्रभाषा विवाद का हल सुझा रहा है।

यत्र–यत्र रघुनाथ कीर्तनम् तत्र–तत्र कृतमस्तकांजलिम्।
भाष्पवारी परिपूर्ण लोचनम् मारुतिम् नमत राक्षसांतकम्।।

जिस प्रकार देवगढ़ के दशावतार विष्णु मंदिर में गर्भगृह की बाहरी तीन दीवारों पर रथिकाओं का निर्माण किया गया है और उसमें विष्णु के स्वरूपों का प्रदर्शन हैं। उसी प्रकार इस मंदिर में भी मंदिर की वाह्य दीवारों पर रथिकाओं का निर्माण कर कुल सात देवियों की मूर्तियों का निर्माण किया गया है। एकाकी रूप में पृथक–पृथक रथिकाओं में स्थित इन देवियों के नाम भी अंकित हैं। यह भारत माता के अन्य विविध स्वरूपों का अंकन है। जिनके नाम हैं– गज लक्ष्मी, धान्य लक्ष्मी, विद्या लक्ष्मी, विजय लक्ष्मी, धैर्य लक्ष्मी, सनातन लक्ष्मी, और वीर लक्ष्मी। इस प्रकार स्पष्ट है कि प्रागैतिहासिक काल से ही पूज्य उर्वरता और समृद्धि प्रदायिनी शक्ति जिसे लक्ष्मी जाना जाता है, के प्रति आदर रचनाकार का अभिप्राय है। यदि जुवो डुबील के इस कथन पर ध्यान दें जिसके अनुसार प्रत्येक काल में देवता तथा धार्मिक दृश्य के अंकन के प्रमुख तत्व विभिन्न स्थलों पर मिलते जुलते प्राप्त होते हैं, तो यह मानना पड़ेगा कि वर्तमान समय में स्त्रियों के लक्ष्मी स्वरूप में पहचानने की आवश्यकता है। प्रतिमा विज्ञान में दो पद्धतियों से अध्ययन अपेक्षित रहता है। एक तो आधुनिक काल में उस देवता की प्रतिमा की पहचान और प्रयोजन तथा दूसरा, उस देवता के प्रतिमा विज्ञान का इतिहास। अदृश्य, अनन्त, सर्वव्यापी ब्रह्म के प्रति आस्था, की अभिव्यक्ति का एक माध्यम साकार स्वरूप की कल्पना करके उसका पूजन करना है। साधक तत्कालीन मापदण्डों के अनुरूप अपने ईष्ट के साकार स्वरूप का निर्माण करता है। पृथ्वी की उर्वरा शक्ति और वसु सम्पन्नता के गुण को उन्होंने नारी की सृजन शक्ति में पाया और इसीलिए श्री, समृद्धि,

विद्या, कला (अर्थात् जिन गुणों से समृद्धि प्राप्त होती है) का प्रदाता स्त्री को माना गया। अथर्ववेद की एक ऋचा में श्री को मेष (He- goat) की बलि का उल्लेख किया गया है। तद्नुसार जो पंचोदन यज्ञ में मेष की बलि चढ़ाता है, वह शत्रुओं की श्री का दहन कर देता है। इस प्रकार इस संदर्भ में श्री समृद्धि से सम्बन्धित मानी गयी है। सिन्धु–सरस्वती सभ्यता की मातृदेवी को देवी श्री लक्ष्मी का प्रागैतिहासिक रूप कह सकते हैं। ग्राम देवता के रूप में पूजी जाने वाली देवी भी वास्तव में सिन्धु घाटी मे पायी जाने वाली 'प्रकृति' शक्ति का प्रतीक हैं। यह अपनी उर्वरता की शक्ति से समाज को समृद्ध बनाती है।[4] रामायण दर्शनम् मंदिर में अंकित इन प्रतिमाओं की विशेषताओं का वर्णन इस प्रकार है–

2.1 **धैर्य लक्ष्मी**– पूर्ण विकसित कमलदल पर पद्मासनस्थ चतुर्भुजी प्रभामंडल तथा किरीटमुकुट से सुशोभित देवी के दो सामान्य हाथों में से दाहिना हाथ अभय मुद्रा तथा बायाँ हाथ वरद मुद्रा में है। शेष दोनों ऊपरी हाथों में पूर्ण विकसित कमल है। देवी साड़ी, चोली, एकावली तथा कंठहार धारण किये हुए है। धैर्य पूर्वक किया गया हठयोग निश्चय ही समृद्धि की और प्रवृत्त करता है। सीमाओं के अनतिक्रमण के लिए धैर्य का विशेष महत्व है।

2.2 **सनातन लक्ष्मी**– यह देवी षड्भुजी निर्मित की गयी है। सामान्य दाएं एवं बाएं हाथ क्रमशः अभय एवं वरद मुद्रा में हैं। सबसे नीचे वाले दाएं एवं बाएं हाथों में क्रमशः खड्ग एवं ढाल धारण किए हैं और ऊपरी दाएं एवं बाएं हाथों में से प्रत्येक में कमल–कलिका लिए हुए है। बायीं गोद में समपाद आसन में सामने की ओर मुख किये हुए छोटा बालक बैठा हुआ है। बालक बायाँ हाथ जंघा पर रखे हुए है और दाहिने हाथ में कमल–कलिका लिए हुए है।

2.3 **वीर लक्ष्मी**– वीर लक्ष्मी अष्टभुजी है। सामान्य दोनों हाथों में से दाहिना अभय मुद्रा और बायां वरद मुद्रा में है। शेष हाथों में नीचे से वर्णन प्रारम्भ करके दाहिनी ओर क्रमशः बाण, त्रिशूल ओर कमल–कलिका और बायीं तरफ क्रमशः पात्र, नाग, कमल–कलिका धारण किए हुए हैं।

2.4 **गज लक्ष्मी**– इस देवी का स्वरूप एवं लांछन धैर्य लक्ष्मी के समान है।

2.5 **धान्य लक्ष्मी**– धान्य लक्ष्मी पुनः अष्टभुजी है। देवी के बायें हाथो में नीचे से क्रमशः वरद मुद्रा, कमल, भुट्टा, ईख तथा दायें हाथों में नीचे से देखते हुए क्रमशः अभय मुद्रा, गदा, कमल तथा गेहूँ की बालियाँ हैं।

2.6 **विद्या लक्ष्मी**– यह देवी चतुर्भुजी है। विद्या लक्ष्मी के दायें एवं बायें स्वाभाविक हाथ अभय एवं वरद मुद्रा में हैं। शेष दायें हाथ में कमल तथा बायें हाथ में ध्वज धारण किये हुए हैं। ध्वज अज्ञान पर ज्ञान की विजय का बोधक है। इस प्रकार से 'सा विद्या या विमुक्तये', की स्पष्ट उद्घोषणा कर रही हैं।

2.7 **विजया लक्ष्मी**– वीर लक्ष्मी एवं धान्य लक्ष्मी की भाँति विजय लक्ष्मी अष्टभुजी हैं। देवी के बाये हाथों में क्रमशः नीचे से ऊपर की ओर बढ़ते हुए वरद मुद्रा, कार्नुकोपिया या निर्वाण– कलिका, ढाल तथा पांचजन्य शंख है। दायें हाथों में क्रमशः नीचे से ऊपर की ओर अभय मुद्रा, पूर्ण विकसित कमल, खड्ग तथा सुदर्शन चक्र है।

यह समस्त देवियाँ पूर्ण विकसित दोहरे कमलदल पर पद्मासन लगाये बैठी हैं। सभी का शरीर हठयोग के प्रभाव से सुगठित है, प्रभामण्डल, किरीट मुकुट (जो राजत्व का सूचक है), एक हार गले से सटा हुआ (ग्रैनेयक) तथा दूसरा लम्बी एकावली है, जो देवी के वक्षों के मध्य तक लटक रही है।

सन् 1970 ई0 में एक के बाद एक हुए संयासी–फकीर आंदोलनों और लगातार तीन अकाल और सूखे से पीड़ित समाज का विषद विवरण और एक नवीन हिन्दू राष्ट्र तथा एक नवीन देवी भारत माता की जो अवधारणा बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय के उपन्यास आनंदमठ में दिखाई देती है, उसका मनोहारी मूर्तन रामायणदर्शनम् और भारतमाता मंदिर में अंकित यह आठ देवियाँ आधुनिक नारियों को स्वावलम्बी और कल्याणकारी स्वरूप होने के लिए प्रेरक पुँज हैं।

सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परम्परायें संस्कृतियों के रूप में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होती हैं। भारतीय संस्कृति अपनी धार्मिकता, आध्यात्मिकता और प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता के कारण ही अटूट बनी रही है।

यदि एक और अनेक सचमुच एक ही सत्य है, तो केवल उपासना के विविध प्रकार ही नहीं, अपितु सामान्य रूप से कर्म के सभी प्रकार, संघर्ष के सभी प्रकार और सृजन के भी सभी प्रकार सत्य–साक्षात्कार के विभिन्न मार्ग हैं। अतः इसके बाद से अब, लौकिक और धार्मिक के बीच कोई भेद नहीं रह जाता। कर्म करना ही उपासना है। प्राप्त करना और उसे अपने अधिकार में बनाये रखना उतना ही कठिन कर्तव्य है, जितना कि त्याग करना और विरत होना।

इस प्रकार कारखाना, अध्ययनशाला, कृषि क्षेत्र और खेल का मैदान आदि भगवत्साक्षात्कार के उतने ही उत्तम और योग्य स्थान है, जितने कि साधु की कुटिया अथवा मंदिर। श्रीरामकृष्ण ने इसी सत्य को इस प्रकार अभिव्यक्त किया है कि ईश्वर साकार और निराकार दोनों ही है। ईश्वर वह भी है, जिसमें साकार और निराकार, दोनों ही समाविष्ट हैं।[5]

3. **निष्कर्ष**– मन्दिर के शीर्ष पर स्थित सात विशाल कलश दिन में सूर्य की रोशनी से और रात में सौर ऊर्जा से प्रदीप्त होकर समस्त प्रांगण को दिव्य स्वरूप प्रदान करते हैं। यह कदाचित सात महाद्वीप के प्रतीक हैं और एक समावेशी विश्व के निर्माण का आह्वान कर रहे हैं। यह मन्दिर उस स्वप्न की यथार्थ प्रतिकृति है जो वर्षों से भारत के बुद्धिजीवी और मानवतावादी नागरिक देख रहे हैं। स्वामी विवेकानंद ने जिसके लिए आजीवन प्रयास किया। यह इस बात का भी साक्षी है कि आज का भारतीय नागरिक अवसर मिलने पर प्राचीन मनीषियों के समान ही निर्माण कला में सक्षम एवं दक्ष हैं। धर्म के चार लक्षण हैं– सत्य, शौच, दया और दान। जब यह प्रबल होते हैं तो पाप का अस्तित्व निस्तेज हो जाता है, शिथिल हो जाता है। ''जीवो ब्रह्मैव नापरः'' अर्थात् जीव ब्रह्म से पृथक नहीं है। श्री राम के आदर्शों को ध्यान में रख कर कार्य करने से सामान्य पुरुष पुरुषोत्तम और विशिष्ट बन सकता है।

Reference

1. Krishna, Deva (1996) Temple of India, Vol-I, Aryan book international, New Delhi.
2. महासचिव,विवेकानन्द केन्द्र, विवेकानन्द शिला स्मारक एक भारत विजयी भारत, मु0पृ0 1–9।
3. Turner, Francis J. and Verhoogen, John (1960) lgneous and Metamorphic Petrology, Department of Geology, University of California, Berkeley, pp. 144-163.
4. Ghosh, Niranjan (1957) Concept and Iconography of The Goddess of abundance and fortune in three religions of India, pp. 31-39.
5. श्री रामायण दर्शनम भारतमाता सदनम, सचित्र प्रस्तुति, स्थाई प्रदर्शनी, विवेकानंदपुरम, कन्याकुमारी।